सफलता की कहानी

सोनुआ गाँव की रिंकी प्रधान ने कौशल प्रशिक्षण प्राप्त कर संवारी परिवार की तस्वीर

" **हुनर है तो कदर है**"। इस वाक्यांश को सौ फिसदी सच कर दिखाया है – सोनुआ (चाईबासा) की **रिंकी प्रधान** ने। अपने तीन भाई–बहनों में सबसे बड़ी रिंकी ने घर की माली हालत को कभी अपने हौसलों पर हावी होने नहीं दिया। पिताजी श्री अंजल प्रधान और माँ श्रीमती सरस्वती प्रधान के पास सोनुआ राजस्व ग्राम में ही जमीन के कुछ छोटे टुकड़े हैं। इन्हीं केवल खरीफ फसल (धान की) खेती योग्य भूमि को चीर कर रिंकी के पिछली पीढ़ियों का भरण–पोषण होता रहा है। लेकिन, परिवार की बड़ी बेटी रिंकी ने परिवार की तस्वीर संवारने का एक सपना देखा। घर की ऊँच–नीच माली स्थिति के बीच भी रिंकी ने प्रतिदिन गाँव से 30 किलोमीटर का सफर तय कर चाईबासा (पश्चिम सिंहभूम जिला मुख्यालय) जाकर इंटर तक की पढ़ाई पूरी की।

इंटर तक की पढ़ाई पूरी करने के बाद झारखण्ड सरकार का कौशल विकास कार्यक्रम रिंकी के सपनों की उड़ान में पंख लगाने के काम आया। जिले भर में चलाये जा रहे कौशल विकास कार्यक्रम की सूचना मोबिलाईजर के माध्यम से मिलते ही, रिंकी ने तनिक भी देर नहीं किया। अपने हौसलों से लबरेज रिंकी ने राजधानी राँची का रूख किया और टाटीसिलवे स्थित All Institute of Local Self Government द्वारा संचालित दीनदयाल उपाध्याय कौशल केंद्र में मेडिकल परिक्षेत्र के कौशल प्रशिक्षण के लिए नामांकन ले लिया। इंटर तक की पढ़ाई हिंदी माध्यम से करने वाली रिंकी को मेडिकल परिक्षेत्र की प्रशिक्षण लेने में काफी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। अधिकांश शब्दावली अंग्रेजी में रहने के बावजूद रिंकी ने अपना छः माह का लिखित और व्यवहारिक कौशल प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूर्ण किया।

प्रशिक्षण के उपरांत अप्रैल 2019 में केंद्र में ही आयोजित कैम्पस प्लेसमेंट काय्रक्रम में रिंकी का चयन राँची के प्रतिष्ठित रामप्यारी ऑर्थोपेडिक अस्पताल में General Duty Assistant के रूप में रू0 7000/– (सात हजार रूपये) प्रतिमाह पर हो गया। यद्यपि यह रकम इतनी भी ज्यादा नहीं कि रिंकी के सभी सपने पूरे हों लेकिन दृढ़ इच्छाशक्ति और आत्मविश्वास से रिंकी ने अपने पहले वेतन से ही छोटी बहन निकिता प्रधान के लिए एक सिलाई मशीन खरीदकर तोहफे में दिया है। साथ ही, आठवी कक्षा में पढ़ाई कर रहे छोटे भाई नितीश प्रधान के पढ़ाई संबंधी छोटी–मोटी जरूरतें अब दीदी ही पूरी कर देती है। इतना ही नहीं बारिश का मौसम आते ही किसान पिता को धरती में लगने वाले बीज एवं अन्य खेती की सामग्री के लिए कर्ज न लेकर बेटी की मेहनत की कमाई की उम्मीद है।

इधर अपनी लगनशीलता के कारण कम समय में ही रिंकी प्रधान ने अस्पताल में भी अपनी खास पहचान बना ली है। अस्पताल प्रबंधन रिंकी की सेवा भावना और कार्यकुशलता के कायल हो रहें हैं। तीन माह के छोटे कार्यकाल में ही रिंकी ने अस्पताल प्रबंधन एवं अपने वरिष्ठ कर्मचारियों का दिल जीत लिया है। अस्पताल में आने वाले मरीज एवं उनके परिजन भी रिंकी की सेवा भावना की तारीफ करते हैं।

रिंकी प्रधान की सफलता की कहानी झारखण्ड की एक बेटी की छोटी सी आशा का समापन नहीं है बल्कि यह राज्य की हजारों बेटियों के पैरों पर खड़े होने के सफर का एक शानदार आगाज है। झारखण्ड कौशल विकास मिशन सोसाईटी की ओर से रिंकी प्रधान को उनके उज्जवल भविष्य के लिए अन्नंत शुभकामनाएँ।

****